International Journal of Information Movement Vol.3 Issue VIII (December 2018)
IFSIJ Impact Factor : 1.575 Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 6-10

वर्तमान वैश्विक समस्याएं एवं भारतीय संस्कृति में समाधान

izfeyk देवी
Lkgk;d izoDrk ¼fgUnh foHkkx½
dU;k egkfo|ky;]
[kj[kkSnk ¼lksuhir½

संपूर्ण संसार में भारतीय संस्कृति को हमेशा से ही एक उच्च स्थान प्राप्त रहा है । अनेक देशों की संस्कृतियाँ समय–समय पर बनती व बिगड़ती jgh] fdUrq Hkkjrh; laLd`fr gj ifjfLFkfr esa v{kq..k cuh jghA Hkkjrh; संस्कृति को जानने से पूर्व हमें संस्कृति शब्द के अर्थ को जानना आवश्यक है । 'संस्कृति' शब्द दो शब्दों के योग से बना है – 'सम' एवं 'कृति', 'सम' milxZ dk vFkZ gksrk gS & ^Hkyk* ;k ^vPNk* rFkk ^d`fr* dk vFkZ gksrk gS 'कार्य' । इस प्रकार 'संस्कृति' शब्द से हमारा अभिप्रायः अच्छे या भले कार्यों ls gksrk gSA oLrqr% ^laLकृति' का शाब्दिक अर्थ परिष्कार या शुद्धि होता है । संस्कृति किसी व्यक्ति विशेष की उपलब्धि नहीं होती व्यक्ति–समूह या fofHkUu le;ksa ij fd, x, fofHkUu 0;fDr;ksa ds iz;Rukssa ds QyLo:i संस्कृति की सृष्टि होती है । दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि ekuoh; thou esa fofHkUu {ks=ksa esa fodkl izfØ.kk mi;qfDr;ka gh ^laLd`fr* ds uke ls tkuh tkrh gSA MkW0 uxsUnz dk dFku gS] ^^laLd`r voLFkk dk uke gh laLd`fr gS vFkkZr~ laLd`fr ekuo thou dh og voLFkk gS tgka mlds प्रकृत राग द्वेषों में परिमार्जन होता है ।

lkekftd thou dh vkarfjd ewy izo`fr;ksa dk lfEefyr :i gh laLd`fr gSA[1] mYys[kuh; gS fd vaxzsth esa ^laLd`fr* dk i;kZ; ^dYpj* gS A अतः कल्चर का अर्थ पैदा करना या सुधारना है । विभिन्न देशों के आचार fopkj esa fHkUurk ds dkj.k laLd`fr lEc/kh Hkkouk Hkh vyx&vyx jgrh gS A ;gh कारण है कि विभिन्न देशों की संस्कृति के बीच अलगाव रहता है । यदि इसका विशद अध्ययन किया जाए तो यह निष्कर्ष सामने आएगा कि इस अलगाव के मध्य भी कुछ समानता अवश्य रहती है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है कि ''मेरे विचार से सारे संसार के मनुष्यों की एक सामkU; ekuo laLd`fr gks ldrh gSA**[2]

वास्तव में धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, विज्ञान और रीति–रिवाज, laLdkj vkfn ds lefUor :i dks laLd`fr dgrs gSa A Hkkjrh; laLd`fr bu स्थापित प्रतिमानों का आदर्श है । सर्वधर्म समभाव की कल्पना सर्वप्रथम Hkkjr esa gh mRiUu gqbZ A भारतीय संस्कृति में ही आज विश्व अपनी leL;kvksa dk lek/kku [kkst jgk gS A ;g lR; Hkh gS A vkt lalkj esa सर्वत्र संघर्ष, निराशा, अविश्वास, अनास्था, भय और आतंक छाए हुए हैं । सर्वत्र घुटन, असंतोष, पीड़ा और संत्रास व्याप्त है । नैराश्य के इस सघन

v/kdkj esa Hkkjतीय संस्कृति ही आशा, आस्था और ज्ञान का प्रकाश विकीर्ण कर सकती है । इस प्रकाशवलय के अंतर्गत सभी के आने की और सभी के लाभान्वित होने की आज आवश्यकता है ।

इन मानवीय समस्याओं के साथ–साथ आज पर्यावरण प्रदूषण, जल ladV] fir`lÙkk] vkradokn] Hkkfrdokn] भोगवाद, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, मूल्यहीनता जैसी समस्याओं से संपूर्ण विश्व जूझ रहा है । विश्व में भौतिक mUufr dks fur u, dhfrZeku LFkkfir gks jgs gSA 0;fDr tgka pUnzek ls cgqr Åij rd igqap x;k gS ogha leqnz ry dh xgjkb;ksa dh lhekvksa dks Hkh yk?k pqdk gS । विज्ञान और तकनीकी के बल पर मनुष्य ने अपरिमित mUufr dj yh gS A fdarq n[kus esa vk jgk gS fd nqfu;k Hkj esa LokFkZfl) vkSj Hkkfrd mUufr djrs&djrs 0;fDr viuks ikfjokfjd] lkekftd] lkaLd`frd o uSfrd mÙkjnkf;Ro dks Hkqyrk tk jgk gS A og Hkqyrk tk jgk gS fd bZश्वर द्वारा बनाई इस प्रकृति के संसाधनों पर सृष्टि के अन्य izkf.k;ksa dk Hkh mruk gh vf/kdkj gS ftruk rqEgkjk A ,d lqlaLd`r समाज में रहने वाले संस्कार युक्त व्यक्ति के प्रत्येक क्रियाकलाप में विश्व dY;k.k dh Hkkouk lnSo fufgr jgrh gSA

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या आज विश्व स्तर पर बनी हुई है । प्रकृति, जल, वायु को मनुष्य प्रतिदिन नुकसान पहुँचा रहा है । लेकिन भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति प्रेम को सदैव दर्शाया गया है । हमारी संस्कृति के कर्णधार ऐसे भगवान राम तथा कृष्ण, शिव, श्री अरविंद, jfoUnzukFk bR;kfn us viuk thou के कितने ही वर्ष प्रकृति की गोद में fcrk, FkS A bu vFkksZa esa izd`fr laLd`fr dh lgpjh jgh gS A izd`fr us मनुष्य पर अनंत उपकार किए है । भारतीय परंपरा में धार्मिक कृत्यों में वृक्ष iwtk dk Hkh egÙo feyrk gS A ihiy dks iwT; ekudj mlsa vVy lqgkx ls lac) fd;k x;k gS A Hkkstu esa rqylh dk Hkkx ifo= ekuk x;k gS] tks कई रोगों की रामबाण औषधि है । बिल्व वृक्ष को भगवान शंकर से जोड़ा गया और ढाक, पलाश, दूर्वा एवं कुश जैसी वनस्पतियों को नवग्रह पूजा आदि धार्मिक कृत्यों से जोड़ा गया । पूजा में कलश में सप्त नदि;ksa dk ty ,oa lIr HkwfÙkdk dk iwtu djuk 0;fDr esa unh o Hkwfe dks ifo= cuk, j[kus की भावना का संचार करता था । साथ ही यह भी दर्शाता है कि हमारा Hkkjrh; lekt gtkjksa lkyksa ls ou] unh] ok;q] lw;Z vkfn dh iwtk djrk vk;k gS vkSj ftldh iwtk dh tkrh gS og दोहन या शोषण के लिए नहीं होती । प्रकृति मनुष्य को स्वार्थ के दायरे से बाहर निकलकर जीना सिखाती है । मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध पंक्ति है :–

“जितने कष्ट कंटको में है
ftudk thou lqeu f[kyk]
xkSjo&x/k mUgsa mruk gh
v= r= loZ= feykA”[3]

vkज जल संकट भी एक बहुत बड़ी वैश्विक समस्या है । इसके बारे में Hkh Hkkjrh; laLd`fr esa fopkj fd;k x;k gS A Hkkjrh; laLd`fr esa unh] iokr] >juk dks ykxksa dh fnup;kZ ls tksMk x;k gS ftlesa 0;fDr viuk कल्याण के लिए देश की समस्त प्रसिद्ध नदियों और समुद्र का स्मj.k djrk gS A

^xaxk fla/kq ljLorh p ;equk xksnkojh ueZnk
dkosjh lj;w egsUnzru;k pesZ.korh osfndk A**

Tky ladV dk yxkrkj jgsxk tSls u cgqr igys gh dg fn;k Fkk A

^jfgeu ikuh jkf[k;s fcu ikuh lc lwu*

lkekftd rFkk Hkkjrh; laLd`fr esa ijekRek dh rjg iwtk x;k gSA xaxk] ;equk] fgeky;] v;ks/;k] rqylh] lw;Z] pUn budk egRo Hkkjoku ls fdlh Hkh de ugha ekuk x;k gS A

vkradokn%

आतंकवाद भी आज एक वैश्विक समस्या है । इसका समाधान भी Hkkjrh; laLd`fr esa fufgr gS A Hkkjrh; laLd`fr vkjEHk ls gh ^olq/kSo कुटुंबकम्' के महती आदर्श को लेकर चली है । भारत अपनी सांस्कृतिक अविच्छिन्नता एवं एकता के कारण ही प्राकृतिक राष्ट्र बना है, जिसके QyLo:i mlds vkarfjd mtkZ ,oa egkik.krk vlafnX/k gS A gekjh laLd`fr esa xg.k vkSj R;ाग का विवेक है । जिससे हमारे राष्ट्रीय मूल्य एवं मान समय–समय पर परिष्कृत होते रहते हैं । हम सदा सर्वदा से विराट के उपासक रहे हैं । जिसके कारण वैश्विक चेतना और विश्व संदृष्टि से Hkkjrh; laLd`fr vuqizkf.kr gS A og ^Lo* ls ^ij* vkSj lo dh vkSj c<+us okyh lnh?kZ J`[kyk gS A og ,slk iokg gS ftlds ,d&,d cwan esa विद्यमान चुनौतियों के शिलाखंड को बहा ले जाने की क्षमता ने ही भारतीय राष्ट्रीयता को विश्वमैत्री, विश्वबंधुत्व और विश्वशांति तक विस्तीर्ण किया है । जहाँ हमारे समकालीन वैश्विक परिवेश में जब मनुष्य का धैर्य और सहिष्णुता tSls Hkko Hkkfrd thou dh vkik/kkih ds ncko ds pyrs frjksfgr gks jgs हैं तब मनुष्यता के उच्चतम आदर्श को लेकर संकल्पित हमारे मूल्य नूतन अर्थवत्ता पा रहे हैं । आज हम देखते हैं कि विश्व में दंगा–फसाद, लूटमार, gR;k] vijk/k c<+rs tk jgs gS A ,slh fLFkfr esa vius j[kh tkrh gS fd ,sls fnunh; dR; u gksa A ;g gekjs vr%dj.k dh l{kefr l{ke vkokt gS] ftlds ey esa laLd`fr gSA vkpk;Z gtkjh izlkn f}osnh us viuk fuca/k ^nhikoyh% lkekftd exyPNk dk izrhekRo* esa gekjh laLd`fr esa 0;Dr मंगल कामना को इन शब्दों में स्पष्ट किया है । "आज से हजारों वर्ष पहले मनुष्य ने निश्चय किया था कि वह दरिद्रता की अवस्था में नहीं रहेगा, वह lkekftd :i esa le`) jgsxk] ,d 0;fDr ugha] ,d ifjokj ugha cfYd lewpk ekuo lewg le`) pkgrk gS A vnkfjnz; pkgrk gS] vexy dk vr

pkgrk g§] mYykl vkj meax pkgrk g§ A nhikoyh dk mRlo mlh सामाजिक मंगलेच्छा का दृश्यमान मूर्त्तरूप है।[4]

de;okn%

आज विश्व में सर्वत्र भोगवाद और वासना का प्रभाव है । भारतीय संस्कृति धर्म एवं अध्यात्म प्रधान संस्कृति है जिसमें 'कर्मवाद' पर विशेष बल fn;k x;k g§ A gekjh laLd`fr e§ ^vuklDr* Hkko ls de djus dk fo/kku है । निष्काम कर्म की भावना को हम भारतीय संस्कृति की महान् देन कह सकते हैं । कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है ''कमण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' अर्थात् कर्म करो फल की चिंता मत djks A lalkj dk dkbZ ऐसा देश नहीं है, जिसकी संस्कृति में इस प्रकार की de&ijk.k feyrh gks A tSlh Hkkjrh; laLd`fr e§ feyrh g§A vkt ds ;qx में भौतिक सुख साधनों को जुटाने में मनुष्य लगा हुआ है । जबकि हमारे मनीषियों ने चिंतन के आधार पर आध्यात्मिक गुणों को ही सदैव izkFkfedrk प्रदान की है । इसलिए भौतिक दृष्टि से हमारी उपलब्धियाँ कम रही है । हमने लौकिक सुख को नहीं, पारलौकिक सुख को सदैव 'श्रेष्ठ' माना है । शारीरिक सुख की अपेक्षा आध्यात्मिक सुख के लिए हम बराबर प्रयत्नशील jgs g§ A

ekuo eY;ks dh LFkkiuk%

आज विश्व म§ ekuo eY;ks dk gkl gks jgk g§ A ise] vknj vkj त्याग की भावनाएं मरती जा रही हैं । इनके स्थान पर द्वेष, क्लेश, स्वार्थ बढ़ता जा रहा है । ऐसी परिस्थिति में आज विश्व को भारतीय संस्कृति की सख्त जरूरत है जिससे प्रेरणा लेकर विश्व में मानवीय मूल्यों की पुनः LFkापना की जा सके । भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र हैं सत्यम् शिवम lqnje] olq/kodqVcde] ekr`nsoks Hko] firk nsoks Hko] xq# nsoks Hko] vfrfFk nsoks Hko] vfgalk ijeks/ke] cgqtu fgrk; cgqtu lq[kk;] ;= uk;Lrq पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता, त्यागोन्मुखता, पुरुषार्थ आदि A

vkt dk ;qx foKku vkj rduhdh dk ;qx g§ A gekjh laLd`fr Kku foKku ds jpukRed fodkl e§ vkLFkk j[krh g§ A ^ft;ks vkj thus nks* okyh ckr e§ Hkh ge vkLFkk j[krs g§ A nwljks dh llinks ij vf/kdkj जमाना या उसे छीनना हमारा धर्म नहीं है । हमारी दृष्टि रही है & ^^ij द्रव्येषु लोष्ठवत्'' अर्थात् दूसरों के धन को मिट्टी के ढेले के समान मानना। हमारी सांस्कृतिक मान्यता रही है कि हम महापुरुषों को मान–सम्मान दें । mudk fn[kk;k ekxZ ij pys A Hkkjrokfl;ks dks :f<okfnrk ,o अंधविश्वासों की जिंदगी कभी प्रिय नहीं रही । ऐसे व्यक्ति प्रगतिशील नहीं होते । हमें तो प्रगति एवं प्रकाश की जिंदगी ही प्रिय रही है । वैदिक laLd`fr dk e= g§ & ^^vlrks ek lnxe;] relkekT;ksfrxZe;] eR;ksekZ·ere`rxe; A**

International Journal of Information Movement Vol.3 Issue VIII (December 2018)
IFSIJ Impact Factor : 1.575 Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 6-10

अतः हम कह सकते हैं कि विश्व की समस्याओं का समाधान भारतीय lLd`fr e gh leाहित है और हम पूर्णतः आश्वस्त भी है कि सदियों से प्रतिकूलताओं के आघातों को झेलकर सतत् परिष्कृत होती तथा और अधिक भव्य, नव्य और दिव्य स्वरूप धारण करती, अपने सशक्त सान्निध्य और पावन संस्पर्श से विश्व को संस्कृत कर देने की क्षमता से समन्वित भारतीय संस्d`fr dHkh fo[kfMr vkj {kh.k ugh gkxh vfir i[kj /kkjk LoPN lfyyk tkguoh dh rjg vud lLd`fr;k d unh&unk dk viu e lekfgr djrh gb viu lgL=k e[kk l ekuork d egklkxj dk fujrj le) djrh jgxhA**

संदर्भः

1& Mk0 uxUn] lkdr & ,d v/;;u] i0 71
2& हजारी प्रसाद द्विवेदी, ग्रंथावली–9, राजकमल प्रकाशन, पृ0 200
3& पंचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, छंद–20, पृ0 13
4& हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली–9, राजकमल प्रकाशन, पृ0 9